

tries. That was the proposal which was discussed. But as I have stated the day before yesterday in my statement, since there was an initial difficulty and until we are able to get over that difficulty, there is no question of any one going over there either singly or along with others.

SHRI RATANSINH RAJDA: I wanted a clarification. The hon. Minister has already stated what discussions had taken place with the envoys etc. I am not probing further into that. I know my responsibility. I want to know whether India on its own, has made certain constructive suggestions to put an end to this conflagration?

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: Sir, this is no time to spell out matters like this. It will have to be considered. Consultations are going on. I can assure the hon. Members that India is very active in this.

SHRI R. K. MHALGI: May I know from the hon. Minister what is the exact position of the mediation today?

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: No mediation.

SHRI A. NEELALOHITHADASAN: India is unable to take the initiative which we used to take in matters like this during the days of late Pandit Nehru.

SHRI P. V. NARASIMHA RAO: There is no question of inability. The initiative has been taken. India is very much a part of it.

Goods Transportation by Railways

*44. **SHRI K. M. MADHUKAR:** Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the transport of goods by the Railways

continues to be in a poor state because of shortage of wagons;

(b) if so, what was the month-wise availability of wagons during the current year so far; and

(c) the measures, if any, taken to improve the position?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI KEDAR PANDAY): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) There has been some deterioration in loading in the recent months for which corrective action has already been initiated. It is expected that the position will improve in the coming months to enable us to pull up the arrears in loading to the maximum extent possible.

The daily average number of wagons loaded during the first seven months of the current year i.e. April to October, 1980 was marginality loss to the extent of 3.2 per cent as compared to the loading during the corresponding period of last year. Availability of wagons for loading of goods depends upon the wagon turn-round which has deteriorated in the recent months because of various reasons such as power cuts in different States particularly in the eastern sector leading to less production and affecting operations in the yards on the railways, agitations in Assam, breaches dislocating train services, etc. Most of these reasons are beyond railways' control. Movement has also been affected in some sectors due to agitations by railway staff.

(b) The number of wagons loaded per day with originating traffic during the months of April to October, 1980 has been as follows:

(In terms of 4-wheel)

Month	Number of wagons loaded per day	
	Broad Gauge	Metre Gauge
April' 80	23106	4885
May' 80	22303	4392
June' 80	21513	4073
July' 80	21794	4122
August' 80	21516	3477
September 80	22150	4495
October'80*	22467	5035

*Figures are provisional.

(c) Apart from closely monitoring the movement on day-to-day basis at the railways' as well as Railway Board's level, greater coordination is also being maintained with different agencies to improve the wagon turn-round. The help of State Governments is also being sought to improve the law and order situation. Besides staff agitations have been dealt with a firm hand.

श्री कमला मिश्र मधुकर : अध्यक्ष महोदय, माल डिब्बों की कमी आज एक सिर दर्द बनी हुई है। बिजली की कमी क्यों है, क्योंकि रेलवे वगन कोयला नहीं ढो पा रहे हैं। पानी की कमी क्यों है, क्योंकि रेलवे वगन चीनी नहीं ढो पा रहे हैं। वैसे जहां भी जाइये, आवश्यक वस्तुओं की कमी है या दूसरे सामान के उत्पादन में रेलवे वगनों की कमी की वजह से काफी गड़बड़ी हो रही है। राज्य-सभा में सप्लाई मंत्री ने स्वीकार कर लिया है जहां रेलवे यातायात की कमी है वहां दूसरी आवश्यक वस्तुएं चीनी वगैरह बाहर विदेशों में चली गई हैं और यहां कमी हो रही है।

क्या ऐसी बात है कि रेलवे वगनों की कमी है या कोई बड़े ब्लैक मार्केटियर्स की कहीं मिलीभगत हो रही है या आपकी अक्षमता है जिसकी वजह से रेलवे वगनों की कमी हो रही है।

श्री केशर पांडे : हिन्दुस्तान में रेलवे वगन्स 5 लाख हैं, इसमें 4 लाख तो ब्राडगेज पर हैं और एक लाख मीटर गेज पर हैं। वगन्स की कमी कुछ है, लेकिन केवल कमी की वजह से ही नहीं बल्कि जो हमारी गुड्स ट्रेन चलती हैं, लोडिंग की कठिनाई है और उन गुडज ट्रेनों की स्पीड बहुत कम है। उसको अगर इन्क्रीज कर दिया जाये तो ठीक हो सकता है। इसके अलावा रिपेयरमेंट में वगन ज्यादा चले गये हैं। जितने रिपेयरमेंट में जाने चाहियें, उससे ज्यादा रिपेयरमेंट में चले गये हैं। 4 परसेंट के हिसाब से वगन्स रिपेयरमेंट में रहने चाहियें, लेकिन उससे ज्यादा रिपेयरमेंट में पड़े हुए हैं।

तीसरा कारण यह है कि वगन्स की भी कुछ कमी है, जिसकी वजह से दिक्कत हो रही है। मैं इस बात को मानता हूं कि लास्ट ईयर जितना लोडिंग हमने किया है, उसमें 3.2 परसेंट 6 महीने में कम हुआ है। हम अब इसको इम्प्रूव करना चाहते हैं। रेलवे में इम्प्रूवमेंट के लिये जिस एक्शन की जरूरत है, वह हमने लिया है और मैं उमीद करता हूं कि नवम्बर से आगे काम तेजी से चलेगा।

श्री कमला मिश्र मधुकर : अगर रेलवे वगनों की कमी है तो क्या आर्थर बटलर कम्पनी को नये रेलवे वगन बनाने का आर्डर देने जा रहे हैं जिससे

कमी को दूर किया जा सके और वैगनों की पूर्ति हो सके ?

श्री केशर पांडे : वैगन्स की कुछ कमी की वजह से 13 हजार वैगनों का आर्डर दिया गया है । मैंने तीन कारण बताये हैं और कुछ वैगनों की कमी भी है, लेकिन केवल कमी की बात नहीं है, एफीशियेन्सी की भी बात है, उसमें कुछ कमी है, उसे भी दूर करने की बात है ।

श्री दौलत राम सारण : क्या त्रिपाठी जी को इसीलिये हटाया गया है ?

SHRI NIREN GHOSH: Because of the shortage of wagons, will the Railway Ministry be pleased to place orders with the wagon manufacturers of the country? It is the railways which encouraged the wagon manufacturers to enlarge their capacity but then they did not place orders with them for almost ten years. This has become the single biggest constraint on the economy of India and a flourishing market for corruption is present in the allotment of wagons and rakes. Taking all these factors into consideration, will they place orders for a sufficient number of wagons with the wagon manufacturers, who are sitting idle? In fact, some of them have gone bankrupt and have been taken over by the Government of India. Please mention the shortage of number of wagons?

SHRI KADAR PANDEY: I have already admitted that there is shortage of wagons. We have already ordered 13,000 wagons. The Railway Board have done their best. But some improvements are needed. I will see that they are attended to this month itself.

SHRI NIREN GHOSH: Will they place orders for wagons?

SHRI KEDAR PANDEY: I have already passed orders for 13,000 wagons. I shall look into this and, if more wagons are required, we shall place further orders.

श्री शिवः प्रसाद साहू: मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूँ कि बाक्साइट ऐसा मैटीरियल है, जो डिफेंस में भी काम आता है, बिजली विभाग में भी काम आता है, और कई अन्य जगह भी प्रयोग में लाया जाता है । छोटा नागपुर में पालामु जिले में टोरी स्टेशन और रांची जिले में लोहरदगा स्टेशन पर, जहां बाक्साइट का सबसे बड़ा भंडार है, डिब्बों की कमी की वजह से काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है और बाक्साइट के प्रोडक्शन में ह्रास हो रहा है । मैं जानना चाहता हूँ कि डिफेंस के काम आने वाले बाक्साइट के लदान के लिए डिब्बों की जो कमी है, उसमें सुधार लाने के लिए कब तक प्रयास किया जाएगा ?

श्री केशरपांडे : मैं जानता हूँ कि पालामु जिले में और रांची में लोहरदगा में बाक्साइट मिलता है । वहां पर वैगनों की कमी की वजह से और दूसरे कारणों से जरूर कुछ कठिनाई हुई है । मैं देखूंगा कि वह कठिनाई दूर हो और हम उसके लिए उपाय करेंगे । हम लोहरदगा की लाइन को भी बनाने की बात सोच रहे हैं । उस लाइन पर भी वह जाना चाहिये, ताकि काम और भी ठीक हो ।

श्री दौलतराम सारण : क्या यह सही है कि डिब्बों की कमी का एक कारण यह

है कि डिब्बे बनाने वाले कारखाने अपनी क्षमता से कम काम कर रहे हैं, दूसरे, अपनी जरूरत पूरी होने से पहले हम दूसरे देशों को डिब्बे निर्यात करते हैं और तीसरे कई बड़े बड़े व्यापारी संबन्धित अधिकारियों को रिश्वत दे कर प्राइवेट कामों के लिए डिब्बे एंगेज कर लेते हैं। क्या डिब्बों की शार्टेज के ये तीन कारण नहीं हैं ?

श्री केशर पांडे : यह बात बेबुनियाद है कि बड़े बड़े आफिसर्स को घूस दे कर यह काम कराया जाता है। यह बेबुनियाद बात है। अगर कहीं पर कर्प्शन होगा, तो हम उसको दूर करने की कोशिश करेंगे।

श्रीमति कृष्णा साहू : मंत्री महोदय ने स्वयं स्वीकार किया है कि वैगनों की कमी है। इस समय रेलवे के पास पांच लाख वैगन हैं और 13,000 वैगनों का आर्डर दिया गया है। क्या मंत्री महोदय को इस बात की जानकारी है कि मोकामा में एशिया की वैगन बनाने की सबसे बड़ी फैक्टरी है, मगर रेल विभाग के द्वारा वहां पर वैगन बनाने का जो आदेश दिया जाता है, उसके लिए बहुत कम प्राइस दी जाती है, जब कि दूसरे प्रांतों में ज्यादा प्राइस दी जाती है ? सरकार की यह ड्युअल प्राइस पालिसी क्यों है और वहां पर वैगन बनाने के लिए आर्डर क्यों नहीं दिए जाते हैं ?

श्री केशर पांडे : मैंने पहले कहा है कि तीन कारण हैं, उनमें से हम पहले दो कारण रेमूव कर दें तब उसके बाद असेसमेंट करेंगे कि और कितने वैगन चाहिये। अभी 13 हजार वैगन्स का आर्डर हमने दिया हुआ है और जो पांच लाख वैगन हैं उनका पहले प्रापर अरेंजमेंट कर लें, वह रिपेयर में कम जायें और तेजी से चलें,

साथ ही स्टेशन्स पर जो वैगन्स डिटेन हो जाते हैं उसको भी रोका जाय। ऐसा करने के बाद और 13 हजार वैगन्स पाने के बाद हम असेसमेंट करेंगे कि और कितने वैगन चाहिये तथा वह कहां पर बनें।
(व्यवधान)

श्री रामचंद्र चौबे : मंत्री महोदय ने कबूल किया है कि वैगन्स की कमी है। वैगन्स की कमी के साथ-साथ उन्होंने यह भी माना है : the percentage of wagons which will go for repair is more than what is actually needed. मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि जो वैगन्स रिपेयर होने के लिए जाते हैं, Whether they are getting proper treatment or not due to storgage of raw materials. क्या आपके पास ऐसी सूचना है कि नहीं कि रेलवे के कारखानों में वैगन ठीक से रिपेयर नहीं होते हैं क्योंकि वहां रा-मैटी रियल की कमी रहती है :

श्री केशर पांडे : मैंने माना है कि रिपेयर में जितने वैगन जाने चाहिये उससे ज्यादा जाते हैं। लेकिन मैं आश्वासन देना चाहता हूं कि इतने वैगन रिपेयर में नहीं जायेंगे और इसमें एफीसिएन्सी आयेगी।
(व्यवधान)

श्री रामावतार शास्त्री : अध्यक्ष जी, क्या यह बात सच है कि रेल डिब्बों की कमी की वजह से बिहार में रबी की फसल के लिए खाद नहीं पहुंचायी जा रही है और क्या यह भी सच है कि बिहार सरकार ने भारत सरकार से एस० ओ० एस० के जरिए यह मांग की है कि साठ हजार टन खाद की तुलाई के लिए हलदीया, पारादीप, मद्रास और बम्बई से विशेष

रेल डिब्बों की व्यवस्था करें, इस सिलसिले में आपने क्या कार्यवाही की है ?

श्री केदार पांडे : यह बात सही है कि गुड्स ट्रेन के मूवमेंट की कमी की वजह से हम बहुत ज्यादा सामान नहीं पहुंचा सके हैं। इस मैलेडी को मैं मानता हूँ, मैं इसको बहुत ही जल्दी, एक-दो महीने के अन्दर, दूर करने का इलाज करूंगा। जहाँ तक रबी की फसल के लिए खाद को पहुंचाने का सवाल है, उसको मैं दूर करने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि इसमें हमें सफलता मिलेगी।

श्री रामावतार शास्त्री : बिहार सरकार ने जो आपके पास एस० ओ० एस० भेजा है उसके बारे में आपने क्या किया है ?

श्री केदार पांडे : उसको मैं रिमपांड करने जा रहा हूँ।

श्री अरिफ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूँ कि आज जो रेलवे की हालत है, या वह पिछली जनता सरकार की निष्क्रियता की देन नहीं है ? मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि भरतपुर में जो रेलवे वेगन्स की फक्ट्री है, उसमें कुछ राजनीतिक दलों की वजह से क्या ला-आउट नहीं है ?

श्री केदार पांडेय : इस सिलसिले में पहली बात यह है कि जब जनता पार्टी की हुकूमत आई, तो उस वक्त वह पार्टी निष्क्रिय रही और अब जनवरी में यह सरकार बनी है, तब से इसमें इम्प्रूवमेंट लाने की कोशिश की जा रही है। मैं सदन को आश्वासन देना चाहता हूँ कि जल्दी से जल्दी इम्प्रूवमेंट होगा। इसी महीने से यह इम्प्रूवमेंट शुरू हो गया है।

Refusal of entry to Indians by U. K. Authorities

+
*45. SHRI RASHEED MASOOD:
SHRI RAJESH KUMAR
SINGH:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government are aware that U.K. Immigration authorities continue to refuse entry permission to Indians visiting U.K.;

(b) if so, the number of Indians who were refused entry permission by the U.K. Immigration authorities since January, 1980 giving the main reasons for refusal to give entry permission; and

(c) the steps taken by Government to solve the problems of the Indian visitors to UK and to ensure that entry permission is not arbitrarily refused by the Immigration authorities?

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI P. V. NARASIMHA RAO): (a) Yes, Sir.

(b) 772 during January—July, 1980. Among the main reasons given by the British authorities are the following:

- (1) not satisfied that visitors were genuine tourists;
- (2) not satisfied that transit passengers were able and intending to proceed at once to another country and were assured of entry there;
- (3) for employment without a work permit;
- (4) for settlement without required entry clearance;
- (5) unsubstantiated claims to be coming for marriage; etc.

(c) Our concern over the question of treatment of Indian nationals seeking entry into Britain and of refusal of entry in some cases on grounds which appeared insufficient or weak has been conveyed to the British authorities at various levels from time to time. Specific complaints are also